जब भी भरोसा करों सावधानी से क्योंकि कभी कभी हमारे खुद के दांत भी हमारी खुद की जीभ काट लेते है।

– अज्ञात

नए इलाके में झड़प

गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद थोड़ा वक्त जरूर लगा, लेकिन दोनों पक्षों ने इसे एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना मानकर बातचीत के जरिए नई सहमतियां बनाने की कोशिश शुरू की। उस घटना ने आपसी विश्वास को छिन्न–भिन्न कर दिया था।

राम अवतार सिंह।।

शनिवार की रात भारत–चीन सीमा पर दोनों तरफ की फौजी टुकड़ियों के बीच एक नए इलाके में झड़प होने की खबर है। इसमें किसी के हताहत होने की बात दोनों में से किसी पक्ष ने नहीं कही है, लेकिन भारतीय सेना के मुताबिक चीनी पक्ष की ओर से वास्तविक नियंत्रण रेखा पर यथास्थिति बदलने की एक और कोशिश हुई जिसे नाकाम कर दिया गया।

सूचनाओं का नितांत अभाव इस संबंध में सबसे बड़ी बात है। सेना की तरफ से जारी किए गए संक्षिप्त बयान से जितनी जानकारी नहीं मिलती, उससे ज्यादा सवाल मन में उठते हैं। लेकिन इस बात की पुष्टि सेना ने भी की है कि इस बार टकराव जिस इलाके में हुआ है, वहां हाल तक कोई समस्या नहीं थी। यथास्थिति बदलने की यह ताजा कोशिश पैंगांग त्सो झील के दक्षिणी किनारे पर हुई है।

इस जगह दोनों पक्षों के दावों को 1962 के बाद से ही सेटल्ड माना जाता रहा है, लिहाजा मामला और ज्यादा गंभीर हो जाता है। गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद थोड़ा वक्त जरूर लगा, लेकिन दोनों पक्षों ने इसे एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना मानकर बातचीत के जरिए नई सहमतियां बनाने की कोशिश शुरू की। उस घटना ने आपसी विश्वास को छिन्न–भिन्न कर दिया था।

सवाल उठ रहा था कि जब पुरानी सहमतियों का ही सम्मान नहीं किया जाएगा तो नई सहमतियां बनाने का मतलब क्या रह जाता है। फिर भी तय हुआ कि गलवान की झड़प को एक अपवाद मान कर आगे बढ़ा जाए। सैन्य कमांडरों के बीच कई दौर की बातचीत हुई जिससे कुछ जगहों पर आमने–सामने खड़ी फौजी टुकड़ियों को एक–दूसरे से थोड़ा दूर ले जाया जा सका। लेकिन इससे स्थायी महत्व का कुछ भी हासिल होता नहीं दिख रहा। भारत का कहना है कि सीमा पर मार्च से पहले की यथास्थिति को कायम किया जाए, फिर उसी आधार पर विवादों को सुलझाने के लिए बातचीत हो। मगर चीन की तरफ से इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आ रही है। दोनों सेनाओं के अपनी मौजूदा स्थिति से पीछे हटने के जिस विचार पर सहमति बनी थी, उस पर अमल को लेकर भी शिकायतें हैं।

ऐसे में दोनों तरफ से सीमा पर सैनिक जमावड़ा बढ़ना स्वाभाविक है। अभी स्थिति यह है कि भीषण तनाव की स्थिति में सीमा के दोनों तरफ हजारों सैनिक भरपूर जंगी साजो सामान के साथ तैनात हैं। दो परमाणु शक्ति संपन्न देशों, दुनिया की दो सबसे ताकतवर फौजों का इस तरह आमने–सामने खड़े होना पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। एक बात तो तय है कि इस स्थिति में कोई भी पक्ष एक झटके में कुछ कर नहीं पाएगा। दूसरी बात यह कि एक जगह भी अगर गोलियां चलने लगीं तो टकराव को सीमित नहीं रखा जा सकेगा।

जाहिर है, यह स्थिति लंबे समय तक जारी नहीं रहने दी जा सकती। सैन्य और राजनयिक स्तर पर कई दौरों की बातचीत कोई नतीजा नहीं दे पाई है, लिहाजा अभी जरूरत इस बात की है कि शीर्ष राजनीतिक स्तर से तनाव कम करने की कोई सार्थक पहल की जाए।

परोपकार

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

परोपकार का अर्थ होता है दूसरों पर उपकार करना। उपकार करने जताना नहीं या उपकार के बदले किसी को मानसिक रूप से दबाना नहीं। बहुत से लोग हैं कि किसी की मदद इसलिए करना चाहते हैं ताकि बदले में उनको कुछ मिले।

परोपकार करने के बाद उसी व्यक्ति को संतोष और खुशी मिलती है जो परोपकार करके भुल जाता है या भूलने का नाटक ही कर देता है। परोपकार के बदले में संतोष और खुशी का मिलना ही अपने आप में एक मूल्य है। इसीलिए नेकी कर और दरिया में डालने वाले ही सच्ची खुशी का अहसास करते हैं और उनके देवता देखते भी हैं।

संपादकीय

ऊंची हुई कैटिगरी

फायदा भारत को यह मिला है कि देश के टूर्नामेंटों की कैटिगरी ऊंची हो गई है, जिससे खिलाड़ियों को जीएम नॉर्म पाने के लिए विदेश में खेलने नहीं जाना पड़ता। असल में नियमों के मुताबिक जिन टूर्नामेंटों में भाग लेने वाले खिलाड़ियों में एक तिहाई ग्रैंडमास्टर्स होते हैं, उनमें जीएम नॉर्म हासिल की जा सकती है पर नॉर्म पाने के लिए तीन ग्रैंडमास्टर्स से खेलना जरूरी होता है। आजकल देश में ग्रैंडमास्टर्स की भरमार है, इसलिए जीएम नॉर्म पाने में अब दिक्कत नहीं रही। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत पिछले दो–तीन दशक में शतरंज में एक शक्ति के रूप में उभरा है। प्रवीण थिप्से भारत के लिए पहली ग्रैंडमास्टर नॉर्म हासिल करने वाले प्लेयर थे। पर उनसे पहले 1988 में विश्वनाथन आनंद पहले ग्रैंडमास्टर बन गए थे। इसके बाद 1997 तक इसमें दिब्येंदु बरुआ और प्रवीण थिप्से के रूप में दो ही का इजाफा हो सका। लेकिन विश्वनाथन आनंद के विश्व चौंपियन बनने पर युवाओं को इस खेल ने प्रेरित किया और इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय युवा 14–15 साल की उम्र में ही ग्रैंडमास्टर बनने लगे। जो देश एक समय ग्रैंडमास्टर्स के लिए तरसता था, वहां ग्रैंडमास्टर्स की लंबी लाइन लग गई। मौजूदा समय में देश में ग्रैंडमास्टर्स की संख्या 65 के करीब पहुंच गई है। पर अब जरूरत शतरंज को देश में उसका जायज सम्मान दिलाने की है, जो देशवासियों के दिलों में इस खेल के प्रति दीवानगी पैदा करके ही दिलाया जा सकता है।

देश में शतरंज बहुत बड़े पैमाने पर खेली जाती है पर इसके प्रति देशवासियों में क्रिकेट और हॉकी जैसी दीवानगी नहीं है। और यह सिर्फ भारत की समस्या नहीं है। शतरंज को लेकर यही स्थिति दुनिया भर में है।

ऐतिहासिक मुकाबला

मनोज चतुर्वेदी।।

भारतीय टीम ने शतरंज ओलिंपियाड में रूस के साथ संयुक्त रूप से गोल्ड जीतकर इतिहास रच दिया है। यह सफलता क्रिकेट और हॉकी में विश्व कप और टेनिस में डेविस कप जीतने जैसी है, पर इसे लेकर देशवासियों और भारतीय मीडिया की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहपूर्ण नहीं कही जा सकती है। इसकी वजह शायद यह है कि शतरंज को प्राइम टाइम मटीरियल नहीं माना जाता। हालांकि इस खेल में भारत ने पिछले दो–तीन दशकों में खासी प्रगति की है और देश को पांच बार विश्व चौंपियन रहने वाला विश्वनाथन आनंद जैसा खिलाड़ी भी मिला है। देश में शतरंज बहुत बड़े पैमाने पर खेली जाती है पर इसके प्रति देशवासियों में क्रिकेट और हॉकी जैसी दीवानगी नहीं है। और यह सिर्फ भारत की समस्या नहीं है। शतरंज को लेकर यही स्थिति दुनिया भर में है।

शतरंज के प्रति लोगों में जुनून पैदा करने के लिए बॉबी फिशर और बोरिस स्पास्की के बीच 1972 में हुए विश्व चौंपियन मुकाबले जैसी दीवानगी बनानी होगी। मीडिया ने इस मुकाबले की कवरेज हर कोण से करने का प्रयास किया था। इसकी लोकप्रियता का कारण अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीतयुद्ध वाला दौर

था। इस मुकाबले ने शतरंज में इतनी गर्माहट ला दी थी कि जिन देशों में शतरंज लोकप्रिय नहीं थी, वहां भी इस मुकाबले की चर्चा होती थी। फिशर और स्पास्की का मुकाबला इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण था कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पहली बार तत्कालीन सोवियत संघ का दबदबा तोड़कर बॉबी फिशर विश्व चौंपियन बने थे। दिलचस्प बात यह है कि बॉबी फिशर में जरा भी देशभक्ति की भावना नहीं थी, फिर भी मुकाबला सोवियत संघ के खिलाड़ी से था, तो फिशर के खेलने से इनकार करने पर खुद राष्ट्रपति निक्सन के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हेनरी किसिंजर ने उन्हें खेलने के लिए मनाया था।

विश्वनाथन आनंद ने उम्मीद जाहिर की है कि जिस तरह 1983 में भारत के आईसीसी क्रिकेट विश्वकप जीतने पर इस खेल के प्रति युवाओं की दीवानगी बढ़ गई थी, वैसा ही शतरंज के साथ भी होगा। लेकिन लगता नहीं कि इस सफलता का देश में शतरंज की लोकप्रियता पर कोई खास असर पड़ेगा। इस बात को चौंपियनशिप जीतने की खबर पर देशवासियों की फीकी प्रतिक्रिया से समझा जा सकता है।

बहरहाल, रूस जैसे पारंपरिक चौंपियन के साथ गोल्ड मेडल जीतना बहुत मायने रखता है। रूस का छठी बार शतरंज ओलिंपियाड का खिताब जीतना इस खेल में उसका दबदबा जाहिर करता है। इससे पहले सोवियत संघ के रूप में वह इस द्विवार्षिक चौंपियनशिप को 18 बार जीत चुका है। जहां तक भारत की बात है तो उसके नाम एकमात्र कांस्य पदक है, जिसे उसने 2014 में जीता था। कोरोना प्रभाव की वजह से इस बार चौंपियनशिप के फॉर्मेट में किए गए बदलाव ने भी भारत की सफलता में अहम भूमिका निभाई है। पहले यह चौंपियनशिप क्लासिकल आधार पर खेली जाती थी और हर मुकाबले में देश अपने सर्वश्रेष्ठ चार खिलाड़ियों को उतारा करते थे लेकिन इस बार इसका ऑनलाइन आयोजन हो रहा था, तो फिडे ने टीम संयोजन को बदल दिया। इस बार हर टीम में दो अंडर–20 खिलाड़ी और दो महिला खिलाड़ियों को शामिल करना जरूरी था। महिलाओं में हमारे पास कोनेरू हंपी और द्रोणावल्ली हरिका के रूप में दो दिग्गज खिलाड़ी हैं और जूनियर वर्ग में भारतीय स्तर बहुत ऊंचा है।

सूडोकु नवताल-5464

सरल

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

Jagrutidaar.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5463 का हल

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1

अपना ब्लॉग

वह शिकस्त जिससे खोया नवाबों का इकबाल

मोहन। सच्ची एकता, दूरदर्शी नीति और अपेक्षित रणकौशल के अभाव में शातिर शत्रु से निपटने की शासकों की साझा तदबीरें किस तरह उलटी पड़ जाती हैं, इसकी एक मिसाल 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर में हुई ऐतिहासिक लड़ाई भी है। दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय, बंगाल के नवाब मीर कासिम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने सोचा था कि वे यह लड़ाई जीतकर ईस्ट इंडिया कंपनी को सारे देश से बाहर निकाल देंगे लेकिन कंपनी से सेनापति हेक्टर मुनरो ने इन तीनों की सेनाओं को रौंद डालने में तीन घंटे भी नहीं लगाए। कारण यह कि अपनी–अपनी ताकत के गुमान में फूली इन सेनाओं को आपस में समन्वय रखना जरा भी गवारा नहीं था। इसका नतीजा यह रहा कि आखिरकार शुजाउद्दौला ने एक लंगड़ी हथिनी पर चढ़कर बक्सर की युद्धभूमि छोड़ देने में ही गनीमत समझी।